D.B. Jadav

पुस्तक : – समकालीन विमर्श
सम्पादक : – डॉ.भगवान कदम
ISBN-NO. : 978-81-947571-6-0

प्रकाशन / प्रकाशक
डॉ.सुनील जाधव
नव साहित्यकार पब्लिकेशन,
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी.
हनुमान गढ़ कमान के सामने,
नांदेड–महाराष्ट्र–439605
मो.9405384672
www.navsahitykarpublication.com

मुद्रण–
तन्मय प्रिंटर्स,नांदेड
डॉ.सुनील जाधव,नांदेड

© सर्वाधिकार लेखक एवं
प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।

मूल्यः–150
संस्करण–प्रथम
प्रकाशन वर्ष– 2022

संपादकीय....प्रा.डॉ.कदम भगवान 3

1.स्त्री–विमर्श और चित्तकोबरा
–अंजली जोशी.....11

2.प्रभा खेतान के साहित्य में स्त्री विमर्श
–डॉ. अंजू सिंह 16

3.अज्ञेय और 'बाल जगत् की देहरी पर' निबंध
–डॉ.अनुकूल सोलंकी.....20

4.महिलांचे स्वातंत्र्य लढ्यातील योगदान
–डॉ.माऊसाहेब यशवंता जाधव.....25

5.राष्ट्रनायक भगतसिंह के मानवदर्शन में दलित सांस्कृतिक यथार्थ
– बुद्धिराम,.....30

6.समकालीन हिंदी साहित्य में दलित विमर्श
–प्रा. डॉ. दत्तात्रय सदाशिव अनारसे.....38

7."पर्यावरण के लिए मानवीय विकास एक गंभीर चुनौती"
– डॉ.रामसिया चर्मकार.....42

8.श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान का बाल साहित्य में योगदान
–प्रा.डॉ.नलिनी एस. पशीने.....49

9.स्त्री विमर्श : बदलता परिदृश्य
–डॉ0 शीनू.....57

10.संजीव कृत जंगल जहाँ शुरू होता है उपन्यास में आदिवासी विमर्श
– प्रा.डॉ.ज्ञानेश्वर माऊसाहेब जाधव,.....62

10.संजीव कृत जंगल जहाँ शुरू होता है उपन्यास में आदिवासी विमर्श

—प्रा.डॉ.ज्ञानेश्वर भाऊसाहेब जाधव
हिंदी विभाग, शिवनेरी महाविद्यालय, शिरूर अनंतपाल

आदिवासी शब्द 'आदि' और 'वासी' इन दो शब्दों से मिलकर बना है। इसका मूल अर्थ निवासी होता है। आदिवासी का शाब्दिक अर्थ है– आदिकाल से देश में रहने वाली जाति। आदिवासी उन्हें कहते हैं, जो पर्वत और जंगलों में दुर्गम स्थानों पर निवास करते हैं, समान जनजातीय बोली का प्रयोग करते हैं तथा अधिकांशतः मांस–भक्षण तथा अर्धनग्न अवस्था में रहते हैं। भारत में आदिवासियों को देशज, वनवासी, जंगली, गिरीजन, इंडिजिनस आदि नामों से पुकारा जाता है। भारत में झारखण्ड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, राजस्थान, असम, महाराष्ट्र, मेघालय, मिजोराम, लक्षद्वीप, अंदमान–निकोबार आदि राज्यों में आदिवासी समाज बसा हुआ है। इसकी आबादी लगभग आठ करोड़ है तथा लगभग 585 जनजातियों का समावेश इनमें हुआ है। इन जनजातियों में भौगोलिक, प्राकृतिक, राजनीतिक एवं ऐतिहासिक परिवेश के अनुसार ही सभी जनजातियों ने अपनी संस्कृति, समाज, रीति–रिवाज, परंपरा का अपना एक अलग ढाँचा गढ़ा है और ढाँचे में रहकर वे अपना जीवन बसर करते हैं, अपनी संस्कृति का वर्णन करते हैं।

आदिवासियों का जीवन अधिकतर जंगलों में बीतता है। जंगल इनकी संस्कृति है और वही इनका धर्म भी है। विभिन्न संस्कृतियों से दूर ये आदिवासी अपनी संस्कृति का विकास स्वयं करते हैं और अपने प्रतीकों की पूजा करते हैं। ये प्रकृतिपूजक है और जंगल, पहाड़, नदियों एवं सूर्य की आराधना करते हैं। वनउपज इनका सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक स्त्रोत होता है। आदिवासी जीवन के बारे में पी. प्रतिभा अपना विचार प्रकट करते हुए कहती है– "ये आदि बाशिंदे हैं और उन्हीं को नागरी अधिकारों से वंचित करके समाज से फेंकने की साजिश हो रही है। इनमें इनकी संपत्ति, जंगल, पानी आदि शामिल है, छीन ली जाती है।"[1] वर्तमान में आदिवासियों का जीवन दलितों से भी गया गुजरा है। वे संगठित नहीं है। उनसे जंगल और जंगल की संपत्ति छीनी जा रही है। जिनकी वजह से मेहनत मजदूरी करके अपना गुजारा चलाने के सिवा उनके पास दूसरा कोई उपाय नहीं है। लेकिन वर्तमान समय में आदिवासियों के विकास के लिए सरकार की ओर से कुछ महत्वपूर्ण योजनाओं को अमल में लाया जा रहा है। उनको शिक्षा देकर मनुष्य धारा में लाने की कोशिश की जा रही है। सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयत्नों के बावजूद आज भी आदिवासी जातियाँ उपेक्षा और शोषण का शिकार भी हो रही है।

आदिवासी जीवन पर लिखा गया संजीव कृत– 'जंगल जहाँ शुरू होता है' यह एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास में जंगल को जीतने का दुर्निवार संकल्प है। इस उपन्यास का कथाक्षेत्र बिहार के पश्चिमी चंपारन के मिनी चंबल में रहनेवाले आदिवासियों के शोषण की गाथा है। थारूओं ने अंग्रेजों की गुलामी को कभी स्वीकार नहीं किया था इसलिए अंग्रेजों ने इन्हें चोर, डाकू, आदिवासी बना दिया है। थारू जाति के आदिवासियों की 'डाकू बनने की विवशता को यथार्थ रूप में संजीव जी ने उपन्यास में चित्रित किया है। थारूओं पर नेता, पुलिस, डाकू और जमींदारों के अन्याय–अत्याचार को उपन्यास में अभिव्यक्त किया गया है।

'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास का नायक जंगल ही है। इस उपन्यास में डाकू बनने के लिए जिम्मेदार उन सभी परिस्थितियों का चित्रण किया गया है, जो सीधे–सादे गौतम बुद्ध के शाक्य के वंश के थारू जाति के आदिवासी लोग डाकू बनने के लिए विवश है। वे सब परिस्थितियां जिनमें प्रकृति का प्रकोप,

दरिद्रता, अंधश्रद्धा, शोषण, भ्रष्ट प्रशासन व्यवस्था, पुलिस प्रशासन द्वारा किए जाने वाले अन्याय–अत्याचार, जमींदारों–नेताओं द्वारा किया जानेवाला शोषण, स्त्रियों के साथ किए जाने वाले बलात्कार ये सब समस्याएं इन्हें डाकू बनने के लिए विवश करती है। लेखक इस उपन्यास के माध्यम से कर्तव्यनिष्ठ पुलिस अफसर कुमार के द्वारा परिस्थितियों में परिवर्तन लाने की बात करते हैं, लेकिन कुमार को मलारी के साथ बलात्कार करते हुए और काली के आगे खुद को आत्मसमर्पण करते हुए दिखाकर अफसरों की मूल्यहीनता और डाकुओं की शक्ति और उनके नेताओं के साथ के संबंध को उजागर किया है।

उपन्यास में एक कर्तव्य परायण कुमार नाम के पुलिस अफसर का चित्रण किया है। पश्चिम चंपारण में डाकुओं के उन्मूलन के लिए 'ऑपरेशन ब्लैक पाइथन' नाम का अभियान चलाया जाता है। इसके चार विभाग हैं। इनमें से एक का प्रमुख कुमार है। जब इस कार्य का जिम्मा वह लेता है तो उसे पता चलता है कि सिर्फ परशुराम, परेमा और नौतिया डाकू नहीं है, वे तो मात्र व्यवस्था के हाथों की कठपुतलियां है। कुमार डाकू को मारने की अपेक्षा डाकू बनने की स्थिति को ही खत्म करना चाहता है। डाकुओं को अच्छा इंसान बनने का मौका देना चाहता है। पर भ्रष्ट पुलिस तंत्र को अकेला सुधार नहीं सकता। कुमार डाकू निर्मूलन के संदर्भ में कहता है– "मैंने बार–बार कहा है सर, डाकू समस्या कोई ऊपर का आवरण नहीं है कि आप उसे खरोंच कर फेंक दें। इनकी जड़ों में भूमिसुधार न होना, ढीला प्रशासन, पॉलिटिकल सेक्टर, रोजगार की समस्या, धर्म, टिपिकल भौगोलिक स्थिति वगैरह है। ये सभी इंटररिलेटेड है, सारा कुछ दुरुस्त कर दीजिए, रोग खुद–ब–खुद खत्म हो जाएगा।"[2] वह डाकू समस्या की जड़ को ही खत्म करना चाहता है। वह काली को सुधारने हेतु विवेकानंद की 'दिमाग का कैसे नियंत्रण रखें' और राहुल सांकृत्यायन की 'भागो नहीं दुनिया को बदलो' ये दोनों किताबें देता है। लेकिन पुलिस व्यवस्था आदिवासियों को मार–मारकर डाकू बना देती है तथा उन्हें विद्रोही बनाकर उनका एनकाउंटर करवा देती है। इन पुलिस वालों के लिए काली के मन में जो गुस्सा भरा है, वह कुमार से इस प्रकार व्यक्त करता है– 'अव्वल तो मुकदमा चलेगा ही नहीं, एनकाउंटर के नाम पर मारकर फोटो खिंचवाने का शौक हो तो अलग बात है, दूजे मुकदमें और सजा के बाद मेरी जाति नहीं बदल जाएगी, हालात नहीं बदल जाएंगे, मैं फिर उसी दल–दल में सड़ूंगा।"[3]

आदिवासियों की दुर्गति का सबसे बड़ा कारण शिक्षा का अभाव और अंधविश्वास रहा है। इन आदिवासियों में अंधविश्वास इस कदर फैला हुआ है कि उन्हें उनकी बातें ही सही लगती है, उससे अलग हटकर वे सोचना ही नहीं चाहते। जंगल से रात को जब भयानक आवाजें आती है, तब कुमार का नौकर पारबती कहता है कि, "हुजूर, बनसप्ती देवी है, भटका रहे है, डाकुओं की देवी है। कभी कोई रूप धर लेती है, कभी कोई और ऊ वह दिन भी ऊ लड़की–लड़की थोड़े ही थी, उन्हीं की माया थी। आंखों पर परदा न डाल देती है मैया।"[4] वैसे तो आदिवासियों में छुआछूत नहीं माना जाता। लेकिन उपन्यास में थारूओं में छुआछूत को बताया गया है। जब इस्लाम सबके साथ बैठकर चाय पी रहा था, तब परेमा कहता है– "एक पेड़ की छाँव में इस्लाम बैठकर दोनों में चाय सुड़क रहे थे मियाँ है। बरतन छुआ जाएगा तो फेंकना पड़ेगा। एक पल को ठिठकता है परेमा, अरे ए तिवारी, अब से चाचा के लिए एक ठो परमानेंट बरतन का जुगाड़ रखवाओ।"[5]

थारूओं की स्त्रियों के यौन शोषण का चित्रण उपन्यास में किया गया है। थारू स्त्रियों के शोषण के प्रमुख दो कारण है– उनमें पहला यह है कि थारूओं की स्त्रियाँ पुरुषों की अपेक्षा सुंदर होती है और दूसरा कारण गरीबी और असुरक्षा। दुःख की बात यह है कि महिलाओं के शोषण के लिए जिम्मेदार खुद महिलाएँ और उनके पति है। गरीबी के कारण पति ही पत्नी को देह व्यापार करने के लिए मजबूर करते हैं। स्त्री को

न्न जाता है, कोई भी उससे अपना मन बहला सकता है। महिलाओं को बेचने के लिए वे किसी भी ार सकते हैं। पुरुषों के लिए रिश्तों का कोई मोल नहीं होता है। जोगी के बारे में सोखाइन कहती धीरे वह औरतों को फुसलाकर लाने और बेटी–बहन के नाम पर ग्राहकों को बेच आने के पूरे तंत्र से ता गया जैसे यह कि इस सौदेबाजी में कभी भी भावुक नहीं होना है, दिल को इतना कड़ा कर लेना : अपनी सगी बेटी, बहू, बहन या पत्नी ही क्यों न हो, अच्छी कीमत मिले तो धंधे की धरम ई है कि ई बिचकना है कि जैसे बिल्ली अपने नन्हे बच्चों को कभी एक मुकाम पर नहीं रखती, उसी तरह तुम के मुकाम बदलते रहो, अपना भी। लड़की को मर्दों वाले घरों में न रखो, आग से खर की रखवाली ली। औरतों के घरों में वे खप खाती है, संदेह भी नहीं होता। जब भी रास्ते में कोई टोके, बेटी, हू ही बताओ, दूसरे रिश्ते शक के दायरे में आ जाते हैं।[5] उपन्यास में जोगी, सोखाइन को नारी देह ते हुए दर्शाया गया है। साथ ही पुलिस और डाकू महिलाओं पर बलप्रयोग करके बलात्कार करते की भौजाई बिसराम बहू के साथ पुलिस स्टेशन में बलात्कार किया जाता है, प्रतिशोध की भावना से ली डाकू बन जाता है। मलारी डाकुओं की रखैल बन कर रह जाती है। इस तरह उपन्यास में महिलाओं के शोषण का वास्तविक चित्रण किया गया है।

उपन्यास में भ्रष्ट व्यवस्था पर करारा प्रहार किया गया है। डाकू समस्या के मूल में भ्रष्ट व्यवस्था ा कभी भी डाकू समस्या का निर्मूलन नहीं चाहती। क्योंकि इन्हीं डाकुओं की बदौलत मंत्रियों को लिए लाखों रुपए मिलते हैं, फिर बूथ कैप्चर करते हुए सत्ता पर विराजित कराने का काम डाकू ही इसलिए नेताओं को डाकू निर्मूलन करना फायदेमंद साबित नहीं होगा। इसलिए डाकुओं को वे अभय ासे ही किसी का अपहरण, हत्या तथा फिरौती करवाते हैं। डाकू पुलिस को डरते नहीं क्योंकि नेता ने चुनाव में जिताया था। चंद्रदीप सिंह का परशुराम, लल्लन बाबू का परमा पहले लठैत थे बाद में ाते हैं। श्याम देव इंटर में फर्स्ट क्लास था पर गरीबी और अन्याय के चलते डाकू बन गया। का शासक तो लंदन; डाकू, विधायक और मंत्री तक है। वह समांतर सरकार चलाता है। स्वयं डाकू कू निर्मूलन का ढोंग करता है। कुमार को सत्ता में आने पर राष्ट्रपति पदक दिलाने का प्रलोभन है। परशुराम स्वयं को लोकरंजक तथा देशभक्त के रूप में बयान करता है– "परशुराम गरीबों की ता है, जिसको इंसाफ नहीं मिलता, उसको इंसाफ देता है। नियाव करता है क्राईम कंट्रोल करता त्र में रहनेवाले आदिवासियों का पुलिस और प्रशासन की ओर से भरोसा उठ गया है। इस संदर्भ में स का पात्र मलारी कहता है– "डाकू का विश्वास कर लेना मगर किसी हकीम का विश्वास मत करना। गया है कि अपनी मुसीबत का निदान पाने की उम्मीद डाकू सरदार परशुराम और काली से कर पुलिस और प्रशासन से नहीं। ये तो अब सत्ता के दलाल हैं।"[7] यह जो पुलिस और प्रशासन के ऊपर का भरोसा उठ गया है, उस भरोसे को जीतने की जरूरत है। पुलिस और प्रशासन दोनों ही किसी या का समूल उच्चाटन नहीं करना चाहती क्योंकि जितनी ज्यादा समस्याएँ होती हैं, उतना ही ज्यादा और राजनीतिक लाभ उनको मिलनेवाला है।

अतः यह उपन्यास समकालीन राजनीति के विरोधाभासों और विसंगतियों का चित्रण करके डाकुओं ह पुलिस प्रशासन और सत्ताधारियों के प्रति पाठकों के मन में घृणा का भाव पैदा करता है। साथ ही ह आदिवासी वर्ग भारतीय संस्कृति का परिचायक होने के बावजूद भी सदियों से इस तरह से सुख ों से वंचित रहा है, जंगली जीवन बिताने के लिए मजबूर है और अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की

पूर्तता करने के लिए निरंतर संघर्ष और विरोध का सामना किस तरह करना पड़ रहा है, इसका यथार्थ वर्णन उपन्यास में किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. समकालीन हिंदी उपन्यास– सं. एम. षण्मुखन– पृ. सं. 54
2. जंगल जहाँ शुरू होता है– संजीव– पृ. सं. 146
3. जंगल जहाँ शुरू होता है– संजीव– पृ. सं. 139
4. जंगल जहाँ शुरू होता है– संजीव– पृ. सं. 21
5. जंगल जहाँ शुरू होता है– संजीव– पृ. सं. 78
6. जंगल जहाँ शुरू होता है– पृ. सं. 274
7. जंगल जहाँ शुरू होता है– पृ. सं. 32

शिवरायांचे आठवावे रूप ।
शिवरायांचा आठवावा प्रताप ।
शिवरायांचा आठवावा साक्षेप । भूमंडळी ॥१॥
शिवरायांचे कैसे बोलणे ।
शिवरायांचे कैसे चालणें ।
शिवरायांची सलगी देणे । कैसी असे ॥२॥
सकल सुखांचा केला त्याग ।
म्हाणोनी साधिजे तो योग ।
राज्य साधनाची लगबग । कैसी केली ॥३॥
याहुनी करावे विशेष ।
तरीच म्हणवावे पुरूष ।
या उपरी आता विशेष । काय लिहावे ॥४॥
शिवरायांसी आठवावे ।
जीवित तृणवत मानावे ।
इहलोकी परलोकी उरावे । कीर्तिरूपे ॥५॥
निश्चयाचा महामेरू ।
बहुत जनांसी आधारू ।
अखंड स्थितीचा निर्धारू । श्रीमंत योगी ॥६॥

SIDDHI
PUBLISHING HOUSE
(National Publication)
landed, Maharashtra (India)
website : www.wiidrj.com

9 788195 397655

लोककल्याणकारी राजा

Benevolent King Shivchhatrapati

डॉ.बब्रुवान केरबाजी मोरे
संपादक